IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, July 2024

हरिशंकर परसाई जी की व्यंग्य विधाओं का स्वरूप और वैशिष्ट्य

पूनम पाठक
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
अ. प्र. सिंह वि. वि., रीवा

हिन्दी के बहुत से प्रसिद्ध साहित्य के विपरीत परसाई केवल गद्य लेखक हैं। अर्थात् वे जो कुछ कहना चाहते हैं, वह गद्य के माध्यम से ही कहते हैं। कविता लिखने वाला तो गद्य में पहुँच जाता है पर बहुधा ऐसा कम ही होता है कि गद्य लेखक को अपनी बात कहने के लिए गद्य छोड़कर काव्य का आश्रय लेना पड़े। वास्तव में गद्य आधुनिक युग का माध्यम है इस माध्यम की जो अनेक विधाएँ हैं उसमें उपन्यास को प्रायः बीसवीं शताब्दी की विधा कहा जाता है पर परसाई जी ने अपने लेखन के आरम्भिक दौर में उपन्यास लिखे, पर उस विधा को उन्होंने लगभग अपर्याप्त पाया और लगभग क्या पूरी तरह छोड़ दिया।